

शं. सं. २०

मराठी

४३४वे

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

ग्रंथ नाम

४३४: वे ५२ (३०८)

गाता.

विषय

म. वेदांत.

५१५)

(1)

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीसरस्वतिनमः॥ श्रीगुरुभ्योनमः॥ विसृदेवसूतं दे-
वं कंसं व्याणूरमदेनं॥ देवकिपरमानंदकृष्णं वदे जगदुरुः॥ १॥ धृतराष्ट्र उ-
वाच॥ मुक्तेश्वरवो विप्रारंसा॥ धृतराष्ट्रस्य संजया॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे
दाया॥ कौरवपांडवमीकोनिया॥ तथेकायकविरातति॥ १॥ संजय उ०॥
संजयस्य प्रणराथसि॥ पांडवशैल्यपरिचयि॥ राजासांगेद्रोणापासि॥
तथाजवकियेउनिया॥ २॥ आचार्यापांडवशैल्यपाहे॥ द्विपदपुत्रस्वना
केलिहे॥ तुसाचिशिष्यह्यया॥ बुद्धिबलेआधिकु॥ ३॥ पांडवशैल्यत
विरजाणा॥ युद्धकरणारभीमार्जुन॥ व्यासमविराट्पुत्रुथान॥ द्रौपदाए
सेमहारीथि॥ ४॥ युधामन्युपराक्रमीबहूता॥ उत्तमोजाविर्यवता॥ स्त

(2)

॥ गी. मु. ॥ १ ॥

भद्रव्य आण्ड्रुपदानिसूत ॥ हे सर्व हि महारथि ॥ ६ ॥ आत्त्यां मध्ये जे
विशिष्ट ॥ ते तु गौ ऐकगा द्विजश्रेष्ठ ॥ माशीत्यासेन्यातस्ससद ॥ ते तु ज
लागी सांगतो ॥ ७ ॥ तु आण्णिशीष्मकणी ॥ कृपाचार्यनितिसंपूर्ण ॥ आ
श्वथामाविकर्ण ॥ सोमदंति ऐसहे ॥ ८ ॥ आणिक हि बहुत विरा ॥ मास्या
निमित्ये मरणार ॥ नानाशस्त्राचे प्रवणार ॥ सकळ कुशकथु डासि ॥ ९
आमविसेना आसि गादि ॥ सीष्मरसितहे प्रौढि ॥ त्याचि सेनावक
दिनयोदि ॥ सीमराखे बळने ॥ १० ॥ गर्डडारि रणभूमीसि ॥ जतनक
रावे सीष्मासि ॥ तो तुलासुमस्तासि ॥ रक्षीलजाणा प्रतापे ॥ ११ ॥ व
डिल भिष्मप्रतापिया ॥ इयधिनाहर्षउपजावया ॥ सकिं नांदकरुनि

॥ १ ॥

(2A)

या॥प्रतापेशंस्ववाजवि॥१२॥मगशंस्वजाणिभेरि॥पणवानकेचे
उनिकरि॥आवधिगर्जनलोथेकेसरि॥थोरनांदजाहाला॥१३॥
श्वेतघोडेमहारथि॥वरिपाडंश्रीपति॥दिव्यशंस्वधेउनिहति॥वि
जवितेजाहाले॥१४॥पांचजंयघेतलाकुण्ठे॥देवदत्ततेविरआर्जु
ने॥सीमवृकोदरतेणे॥पोडुशंस्ववाजविला॥१५॥आनंतविजयग
जरे॥वाजविलायुधिष्ठिरे॥नंदुकसहदेवविर॥मणिपुष्पकवाजवि
ले॥१६॥काशीराजथनुर्धर॥शिरवडिमहारथिविरा॥धृष्टधुमंतविरा
टथोर॥सात्यकिआपराजित॥१७॥द्रुपदआणिद्रौपदिसूत॥सूभद्रा
पूतविरव्यान॥हेमीकानिसमस्त॥वैगळालेशंस्ववाजविला॥१८॥

(3)

॥ गीम सु० ॥
॥ १ ॥

तयानादत्वेनिगजरे। दुमदुमीलीपाताकसीसरे ॥ दुर्योधनासिष
रलेसरे ॥ हृदयफुटेस्वेदने ॥ १९ ॥ सीद्धजालेदकसार ॥ तेजावस
रिक्पिविरादिखोनशस्त्रबडिवार ॥ धनुष्यवाहिले ॥ २० ॥ आर्जुनउ
आगारायास्रपति ॥ आर्जुनबोलेकेशवाप्रति ॥ दोसेन्यानिगुति ॥
रथेनईजे ॥ २१ ॥ मीपाहेनसर्वसि ॥ युद्धउलंटाकवणासि ॥ मज
हतिकामारविसि ॥ यारणामध्येकेशवा ॥ २२ ॥ दुर्बुद्धिकोरवपति ॥
इष्टइष्टुजालेति ॥ कोणकोणतनिकृति ॥ पाहेनहृष्टि ॥ २३ ॥ संजयउ
आगार्थर्तृराथा ॥ ऐसेआर्जुनबोलेनिया ॥ कृष्णेरथेनेउनिया
दोसेन्यातस्थापिला ॥ २४ ॥ भीष्ममुखकरुनि ॥ पृथ्वीचेराजेमीळोनि

॥ २ ॥

(3A)

कौरवमीलालेदस्वोनि॥ अर्जुनपाहेते॥ २५॥ पार्थसकलहिदेरवे॥
पितृष्यपितामहविशेषे॥ आचार्यश्रातुपुत्रजनिक॥ पुत्रसस्वजा
वधेचि॥ २६॥ स्वस्तरसोयरेदोसैन्धी॥ बंधवगतिजाणुनि॥ कृपाउ
पजलीमनि॥ कौतयुबालोलागला॥ २७॥ अर्जुनउ॥ पहिपरमकृप
करुन॥ विशादपाविलेसेमन॥ युद्धकरुस्थितिस्वजन॥ युध्यासि
सिद्धजेउभे॥ २८॥ दुःस्वहोतसेगात्रासि॥ मुखशोषतेहृषिकेशी
कंपरोमांवांगसि॥ ऐसीस्थितिजाहालि॥ २९॥ धनुष्यपडेहाति
हुनि॥ स्वचाधउधडितिदिशोककुरुनि॥ मीशक्तनेकराहावयालगु
णि॥ मनमासेस्त्रमतसे॥ ३०॥ आपलेस्वजनम्यामारुनि॥ मजसु

(4)

॥ गी. मु. ॥
॥ १ ॥

स्वकृतेनुपजेमनि ॥ विपरितचिहेदि सतिनयनि ॥ केरावरायमिज ॥ ३१ ॥
कृष्णांजयाविधाउनाहि ॥ राज्यसुखाचिगोडिकाहि ॥ राज्यभोगसक
हि ॥ नलगमजस्वामि ॥ ३२ ॥ अकारणभोगबहन ॥ आपणहोतो जिरु
त ॥ प्राणधनदाकृ निसमस्ता ॥ पुत्रासि आले सर्वहि ॥ ३३ ॥ पीतपुत्रपसि
चे ॥ वडिलपीष्म आमूचे ॥ द्रोणगुरुबालीजेवाने ॥ मामेमेहणे आवचे
चि ॥ ३४ ॥ हेमजमारिनिजरि ॥ परिमीथीनेनमारि ॥ श्ये लोक्षराज्यजा
लेजकि ॥ पृथ्वीचाकोणहेवा ॥ ३५ ॥ धर्तरे राष्ट्रपुत्रमारिनि ॥ सुखनवाटे
मासेमनि ॥ शस्त्रेमारितापापपाउनि ॥ हेकेविधउदारि ॥ ३६ ॥ स्वर्णा
नियानारायणा ॥ नमारिबंधुनेजाणा ॥ यानेवधुणी आपणा ॥ सुखकेव

॥ ३ ॥

(4A)

मज्जमाधवा ॥ ३७ ॥ जयावंशीकुलक्षयजाला ॥ तथाचाकुळचारबुडाला ॥
हाविचारत्याहिसांडिला ॥ मीत्रदोहेचंपानकं ॥ ३८ ॥ पापजालीयावरि
नाशपावतिनारि ॥ कुलधर्मबुडाल्यावरि ॥ हारिपापलागिला ॥ ३९ ॥ ज्या
वंशीकुलक्षयजाला ॥ त्याचाकुलधर्मबुडाला ॥ धर्मगेलीयावरिकळा ॥
पापवश्यहोतसे ॥ ४० ॥ कृष्णाआधर्मजालीयावरि ॥ दुष्टहोतिकुळचा
नारि ॥ धर्मचाललीयावरि ॥ वर्णशंकरहोतसे ॥ ४१ ॥ वर्णशंकरजाली
यावरि ॥ कुळबुडेलपैआघारि ॥ पिडादकक्रियाआवधारि ॥ नाहिकराव
थासि ॥ ४२ ॥ अणोनिकुळघ्नविदोषथोर ॥ तेणहोयवर्णशंकर ॥ बुड
कुळधर्मआचार ॥ जातिधर्मतेहि ॥ ४३ ॥ आधर्मजालीयावरि ॥ नरकि

(5)

गी॥मु॥
॥१॥

वास आघोरि॥ हे आर्यिके श्रीहृरि॥ स्वामी जनार्दना॥ ४४॥ हेतुं आ
श्रियं थोर॥ राजपलो मे दोषकर॥ स्वजन मारुनि सुखफार॥ इच्छितो॥ ४५
ऐसे आर्जुन बेलोनि॥ रथारवाल होउनि॥ शोक करि मनि॥ तथारणात ४६
संजय उ०॥ संजय स्मरणे राया॥ ऐसे आर्जुन बेलो निया॥ धनुष्यवा
णटाकु निया॥ दुःख वैसला भासे॥ ४७॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनि
षत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आर्जुनविषादयो
गोनामप्रथमोऽध्यायः॥ १॥ ४७॥ ॥ संजय उवाच॥ आर्जुन वैशि
ला महिष द्रुते॥ आश्रुपात आलेन यनाते॥ ते देखोनि बोलिले वाचे
श्रीकृष्णदेवे॥ १॥ श्रीभगवानुवाच॥ हे करमक कोटुनि॥ उपजले विश

॥४॥

(SA)

मनि॥ स्वर्गतेनासोनि॥ आपकितिहिरिल॥ २॥ नपुत्रकपणनधरिम
नि॥ तुजयोग्यनोहेआणोनि॥ सुद्रवाकिहृदयिहृनि॥ उद्वरितयु
द्वसि॥ ३॥ अर्जुनउ॥ पार्थस्त्रणेमधुसूदना॥ सीधंद्रोणवडिल
आणा॥ पूजावियायोग्यआपणा॥ आणोकेविमाक॥ ४॥ गुरुवधुनरा
ज्यकरणे॥ त्यादुनिशीक्षाआचरणे॥ वडिलवधुनिस्तेगसोगणे॥
तेरुथिरसोगजाणपा॥ ५॥ आधिपउणेहोइलिकेणा॥ जयोत्याकि
आपणा॥ कौरवंमारुनिथाजाणा॥ कायजिवित्वा॥ ६॥ मजदेहिआ
संस्त्रमु॥ स्त्रणोनिनुत्यासपुसधर्मु॥ मजसूखाआसंस्त्रमु॥ अय
तेमजसांगीजे॥ ७॥ नदिसेऐसेजेशोकनाशि॥ शोकनोशोधकशंदि

(6)

॥ गी॥ मु॥
॥ २॥

यासि॥ पावलियात्रिदशेदूलक्ष्मीशि॥ तरिसुखनपवेमनी॥ ८॥ परमा
त्मयासवे॥ अर्जुनबलिधावे॥ युद्धनकरिचहत्विषाव॥ निश्चयकला॥ ९॥
हासोनियादेव॥ अर्जुनाससांगेसाव॥ क्रोधसांगवाहाव॥ उपदेशकरि
श्रीभगवन्तु॥ आशोचणेनेशाचणे॥ जाणिवेचेबहुबालणे॥ गलिमलि
याचिदुःखकरणे॥ नकरितिचपंडित॥ ११॥ मजनुजराजयासि॥ गणी
तन॥ हिजन्ममरणासि॥ आर्ण॥ पुढेसर्वासि॥ आसंख्यात॥ १२॥ जीव
आसत्तादेहि॥ बाळतरुणदृष्टहाकाहि॥ जीवदेहधारिपाहि॥ सुतधि
रमोहोनपावति॥ १३॥ मात्रातइद्रियजाण॥ विषयआसतिप्राणा॥
देत्रीतउष्णउन॥ आसत्यजाणा॥ १४॥ सुखदुःखतुल्यमानिति॥ जे

॥ ५॥

(6A)

क। फलत्याजविमत्य ॥ उजाज्ञीयावसेनिश्चित ॥ फळटाकुनिकर्मकरि ४२
सकामबुद्धिआचरति ॥ स्वर्गसूरवातेपावति ॥ पुण्यसरलीथविआंति
पुनरपिभोगसोगीति ॥ ४३ ॥ भोगसाग्यांतजांनद ॥ कामनाहतनंद ॥
एकाग्रतासमाध ॥ तथाविहनबुद्धि ॥ ४४ ॥ त्रिशुणात्मकेदेवजाण
निर्गुणहोयतुआर्जुन ॥ सत्वेराहूहूहोउन ॥ आत्मतिआसोनि
या ॥ ४५ ॥ स्वप्नउदकिपाहि ॥ सर्वसंपादिहृदाचेठारि ॥ वेदशास्त्र
जाणतेहि ॥ ब्रह्मीमिके ॥ ४६ ॥ वामीधिकारिहोउनि ॥ तेफळनधारि
मनि ॥ फळाविरहितहोउनि ॥ कर्मकरवे ॥ ४७ ॥ योगआचरोनि ॥
कर्मफळसंगत्यजुनि ॥ सिद्धिआसिद्धिसमधरोनि ॥ तोआनुरागी ॥ ४८

(7)

॥ गी. सु. ॥
॥ २ ॥

बुद्धियोगाहिनः ॥ ज्ञानयोगात्तेरिच्छन् ॥ कर्मकरिफळवक्त्रुन ॥ तुच्छफळ
ज्ञानआंगीकारुनि ॥ फळहारपतिदोहि ॥ योगात्तेआंगीकारुनि ॥ कुंरा
कहोय ॥ ५० ॥ ह्यणोनियोगीकर्मकरिति ॥ फळसंगादिकेत्यजिति ॥
जन्मबन्धावेगकेहेति ॥ पदपावति जानामय ॥ ५१ ॥ ज्ञानजाणी
तलीया ॥ मोहसागरितरार्थनजया ॥ पाविजेतयाठाया ॥ वैराग्यपा
वसि ॥ ५२ ॥ श्रवणसंदेहवाटे लजवि ॥ संदेहराकृनिसावदि ॥ तेणे
पावसि आवधारि ॥ योगाभ्यास ॥ ५३ ॥ अर्जुनउ ॥ स्थितप्रजात्वि
बुद्धिकैसी ॥ योगीवर्तणुकेसि ॥ योगजालीयात्यासी ॥ स्थितप्रज्ञा
णाजे ॥ ५४ ॥ श्रीभगवानुवा ॥ देवह्येणपार्थ ॥ जेनातकेकाममनो

॥ २ ॥

(4A)

रथा ॥ आत्मसूखिस्त्रिता ॥ तो प्रज्ञबो लिजे ॥ ५५ ॥ दुःखनिश्चकस्
खसंगी ॥ मयक्रोधटकु निवितरागी ॥ तो मुनिज्ञानजगी ॥ स्थितप्र
ज्ञबो लिजे ॥ ५६ ॥ शुभआशुभप्रतिज्ञालीया ॥ ममत्वनगुते तथा वा
या ॥ आनंदबुद्धितया ॥ त्या प्रज्ञाप्रतिष्ठिलि ॥ ५७ ॥ कासक आंगजे
से ॥ हातपाय आवरिसरिसे ॥ इन्द्रिय आवरुनि विशेषे ॥ तथाज्ञा
नप्रतिष्ठिले ॥ ५८ ॥ निराहारिआसे ॥ विषयवर्जित्कृतिफासे ॥ त्या
चिवासनाआसे ॥ ब्रह्मदृष्टिनि ॥ ५९ ॥ पुरुषप्रयत्नविचक्षणु ॥ आप
णज्ञानिआसेन ॥ इन्द्रियमनतेहिहारुना ॥ कोतयाजाण ॥ ६० ॥ सर्व
नेमालागुणि ॥ युक्तनाहियागाहुनि ॥ इन्द्रियवश्यकेल्यानि ॥ तेविप्रज्ञा

(8)

॥ गी॥ मु॥

॥ २ ॥

सा

प्रतिष्ठिता ॥ ६१ ॥ विषयवेध्यानकरि ॥ विषयसंगे काम आंतरि ॥ का
मापासे नि क्रोध सारि ॥ ऐसे हे निर्माण ॥ ६२ ॥ क्रोधापासे नि मोहो ॥
श्रुति च्या त्त्रं शीठ वी ॥ स्मृति बुडाली या ॥ मूर्ख होतसे ॥ ६३ ॥ राग
द्वेष ऐस वर्जुन ॥ तो आत्म विश्य कर्तु ॥ इंद्रियासंगे सोग सोगुण ॥ तो
प्रसाद भोगील ॥ ६४ ॥ प्रसाद पाव लिय विरि ॥ सर्व दुःखा हे य वेद
रि ॥ आत्म प्रसादे चित आवरि ॥ प्रतिष्ठा पावतो ॥ ६५ ॥ ज्ञाना विना सा
पेड बुद्धि ॥ बुद्धि ना भाव शुद्धि ॥ ध्याना वाचु नि संसिद्धि ॥ शान्त को
वुनि ॥ ६६ ॥ इंद्रिय विचरत आसता ॥ त्या विरिना जालि चित्ता ॥ प्रज्ञाना
से पाहता ॥ उदकि ना व वायु बके ॥ ६७ ॥ या कारणे आर्जुना ॥ विषया

॥ १ ॥

(8A)

पासावकरिवंचना ॥ टाकिर्इद्रियवासनागते प्रज्ञाप्रतिष्ठे लि ॥ ६८ ॥
जैरात्रिसर्वभृति ॥ तिसमर्त्योगीयजिति ॥ नेथेभूताचिजागृति ॥
तैरात्रिमुनिचि ॥ ६९ ॥ संपूर्णसमुद्रिजाणा ॥ तिथउदकजायमीका
न ॥ तेविकामनालीन ॥ शांतिपावे ॥ ७० ॥ सर्वकामसांडनि ॥ संग
त्यागिनिस्पृहहोउनि ॥ मोहआहंकारयमुनि ॥ शांतिपावे ॥ ७१ ॥
आशाब्रह्मिष्ठितिवर्तति ॥ मोहाकूपसंसारनपावति ॥ देहावसानि
स्मरति ॥ तेमुक्तजाणा ॥ ७२ ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सूत्रस्य वि
द्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णांजुनसंवादे सारंभ्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥
॥ ॥ आजुनउवत्वि ॥ आजुनहृणकृष्णांनाथा ॥ कर्मद्विनितानश्रष्ट

(9)

॥ गी ॥ सु ॥
॥ ३ ॥

आसता ॥ आघोरकर्मकाजानंता ॥ प्रवर्तवितोसिमज ॥ १ ॥ निश्चय
वाक्येणे ॥ भुलविसिजातः कर्णे ॥ तरियेकनिश्चयसागणे ॥ श्रेयपा
विजल ॥ २ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ दोप्रहराचिनिष्ठा ॥ श्रुर्विसांगीतल्याप्ता
रता ॥ ज्ञानयोगाहुनिपरता ॥ कर्मयोगचालिजे ॥ ३ ॥ कर्मरंभजेनक
रिति ॥ तेपुरुषमोक्षनपावति ॥ कर्मउगीचल्यजिति ॥ तथासिद्धिनाहिः ४
कोणीकर्मनकरिति ॥ क्षणयेककर्मसाडिति ॥ दाढनियाकर्मकरवि
मि ॥ प्रकृतिजाण ॥ धाकर्मद्रियातदंडि ॥ मनकल्पेनानसंडि ॥ तथा
नाहि विषयाचिसाडि ॥ ह्रणोनिभूर्ख ॥ ६ ॥ इद्रियदमनकरिस्व
भावि ॥ इद्रियाहातिकर्मकरषि ॥ कर्मफळाचिआशानेधरिगवि ॥ तेचि

॥ १० ॥

(9A)

श्रुष्ट ॥ ७ ॥ वर्णाश्रमकर्मकरि ॥ कर्मनकरिताजरि ॥ आवसानि
सिद्धिस्वरि ॥ नकर्मदाकिता ॥ ८ ॥ यज्ञविष्णुऐसाश्रुति ॥ याविग
केआन्येआर्पिति ॥ कोतयातप्रियायर्थदेति ॥ फळटाकनिआ
चर ॥ ९ ॥ ब्रह्मयायज्ञआणीश्रुष्टिकेली ॥ आसीर्वादाचिदुदली ॥
यज्ञकामधेनुदुहिलि ॥ मकासासाव ॥ १० ॥ तुलीभावेदेवाते
पुजा ॥ तेप्रसन्नहसति सहजा ॥ परस्परसावकाजा ॥ श्रयदेतिल
११ ॥ श्रुष्टसावेकरुनि ॥ यज्ञमुखसमपेनि ॥ तोदेवआंगीकाक
नि ॥ फळदेतकल्पनेचे ॥ १२ ॥ यज्ञशेषजसक्षिति ॥ त्याची
पातकिजाति ॥ उदरार्थपशुसक्षिति ॥ पापसोगीतिदेखा ॥ १३

(१०)
गी. सु.
३

आन्नापास्सनिभुतेहोति॥ धान्यपर्जन्यनिपुजति॥ पर्जन्ययस्तानि
निस्सूकृति॥ यज्ञकर्मपास्सनि॥ १४॥ कर्मब्रह्मयापास्सनि॥ ब्रह्म
आक्षरंहुनि॥ याकारेणब्रह्मासाक्षिणि॥ नित्यकर्मकरितेसा॥ १५॥
ब्रह्मचक्रप्रतिष्ठिले॥ तेजन्मपावोनि संपादिले॥ तेपापिजन्मले
भूमिभारहोउनिया॥ १६॥ आत्मतिराहिले॥ आत्मसुरिक्त
पजाले॥ स्वरूपिवसामावले॥ तयाकर्मनलागति॥ १७॥ कर्मन
केलीथाकाहि॥ परस्परगुंतलनाहि॥ तेसीचसर्वभूतत्वागशि॥
फळेष्टानकरि॥ १८॥ याकारेणनिःकाम॥ कर्मकरविसकाम॥
निःकामकरवेकाम॥ तोब्रह्मीभीळे॥ १९॥ विदेहादिकजन

(10A)

कबोलिलो ते कर्म सी हि पावले ॥ अणो निश्रेष्ठ बोलिलो ॥ तु क
र्म करि ॥ २० ॥ जेश्रेष्ठ वर्तति ॥ लोक ते से वी आवरति ॥ जैसे ते प्र
माण करि ति ॥ जन त्या मागे आसे ॥ २१ ॥ त्रेलोक्य चि वाई ॥ पा
थी भज का हि करणे ना हि ॥ आवास पावेण ना हि ॥ तरि कर्म कर ॥ २२
जरि कर्म मी न वर्त वि ॥ तरि कर्म बुडा हे स्वप्ता वि ॥ म्या आवरण
क कर वि ॥ लोक ते से च कर ति ल ॥ २३ ॥ मी कर्म ज रि न करि ॥ सं
कर हे इ ल आव धारि ॥ लोक स्रष्ट ति ल या परि ॥ ते करणे म ज न
हि ॥ २४ ॥ लो क ने ण ति ल का हि ॥ सारि ता आ न्यो न्य पा हि ॥ निः
कामे करि ता पा हि ॥ लोक संग्र हा र्थ ॥ २५ ॥ क्षा नि ये क चि त हो उ



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com